JANUARY 2024 | VOL. 45 I PAGE 8

आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

नव वर्ष

आया नव वर्ष छलकते हुए छलक गया।
बीता हुआ वर्ष सुख दुख से भरा रहा था
वह प्यारा अमृत कलश।

गिरा जो मोती उसका धरा पर, चमकता हुआ निकल आया।

नव वर्ष अभी कली है फिर फूल बनेगा।
गुनगुनाता हुआ दिल में उमंग लेकर
झूमकर खिल आया है नव वर्ष।

अतीत के स्मृतियों से नन्हे पंख फैला कर
दे गया सुख की हवा नव वर्ष।

आप सबको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

- वंश बहुगुणा, 8अ
तक्षशिला

2024

आया नया साल

यूं तो पूरे विश्व में नया साल अलग-अलग दिन मनाया जाता है, और भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में भी नए साल की शुरूआत अलग-अलग समय होती है। लेकिन अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी से नए साल की शुरूआत मानी जाती है। चूंकि 31 दिसंबर को एक वर्ष का अंत होने के बाद 1 जनवरी से नए अंग्रेजी कैलेंडर वर्ष की शुरूआत होती है। इसलिए इस दिन को पूरी दुनिया में नया साल शुरू होने के उपलक्ष्य में पर्व की तरह मनाया जाता है।

चूंकि साल नया है, इसलिए नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य, नए आईडियाज के साथ इसका स्वागत किया जाता है। नया साल मनाने के पीछे मान्यता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाए, तो साल भर इसी उत्साह और खुशियों के साथ ही बीतेगा।

हालांकि हिन्दू पंचांग के अनुसार के मुताबिक नया साल 1 जनवरी से शुरू नहीं होता। हिन्दू नववर्ष का आगाज गुड़ी पड़वा से होता है। लेकिन 1 जनवरी को नया साल मनाना सभी धर्मों में एकता कायम करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है, क्यों कि इसे सभी मिलकर मनाते हैं। 31 दिसंबर की रात से ही कई स्थानों पर अलग-अलग समूहों में इकट्ठा होकर लोग नए साल का जश्न मनाना शुरू कर देते हैं और रात 12 बजते ही सभी एक दूसरे को नए साल की शुभकामनाएं देते हैं।

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

- अदिति भार्गव, IX ए, तक्षशिला सदन

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। स्वामी विवेकानंद एक महान संत और नेता थे । बचपन में नरेंद्र नाथ दल से जाने जाते थे ।उनकी बुद्धि बचपन से ही बड़ी तेज थी वह हमेशा से ही युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं इसलिए उनका जन्मदिन प्रत्येक वर्ष युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद एक बुद्धिमान विद्यार्थी थे ।उन्हें संस्कृत के बारे में बहुत ज्ञान था। उनको पढ़ाई के अलावा खेल कूद में भी रुचि थी। वे बचपन से ही आध्यात्मिक थे ।स्वामी विवेकानंद जी कोलकाता में पढ़ाई पूरी कर रहे थे ।तभी उनकी मुलाकात श्री रामकृष्ण परमहंस जी से हुई स्वामी विवेकानंद जी का चरित्र और ईश्वर के प्रति भक्ति देखकर रामकृष्ण परमहंस जी ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। स्वामी विवेकानंद एक संत ही नहीं एक महान देशभक्त विचारक और लेखक भी थे ।"उन्होंने उठो जागो स्वयं जाकर औरों को जगाओ" "अपने नर जन्म को सफल करो" जैसे मूल मंत्र देशवासियों को दिए। स्वामी विवेकानंद जी ने सामाजिक सेवा में अपना जीवन लगा दिया वे युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। उन्होंने भारत के साथ-साथ दूसरे देशों में भी हिंदू धर्म का प्रचार किया। भारत के गौरव को उज्जवल बनाने के लिए उन्होंने सदा प्रयास किया।

स्वामी विवेकानंद के प्रेरक प्रसंग

एक बार स्वामी विवेकानंद हिमालय की यात्रा पर थे तभी उन्होंने वहा एक वृद्ध आदमी को देखा जो बिना कोई आशा लिये अपने पैरो की तरफ देख रहा था और आगे जाने वाले रास्ते की तरफ देख रहा था।

तभी उस इंसान ने स्वामीजी से कहा, “हे महोदय, इस दूरी को कैसे पार किया जाये, अब मै और नही चल सकता, मेरी छाती में दर्द हो रहा है।” स्वामीजी शांति से उस इंसान की बातो को सुन रहे थे और उसका कहना पूरा होने के बाद उन्होंने जवाब दिया कि, “नीचे अपने पैरो की तरफ देखो। तुम्हारे पैरो के नीचे जो रास्ता है,यह वो वह रास्ता है जिसे तुमने पार कर लिया है और यह वही रास्ता था जो पहले तुमने अपने पैरो के आगे देखा था, अब आगे आने वाला रास्ता भी जल्द ही तुम्हारे पैरो के नीचे होंगा।” स्वामीजी के इन शब्दों ने उस वृद्ध इंसान को अपने लक्ष्य को पूरा करने में काफी सहायता की।

- आर्य नंदिनी, 8अ, तक्षशिला सदन

मेरा भाई

मेरा भाई सबसे प्यारा।
करता दिनभर शैतानी ।
फिर मम्मी से डांट खाता ।
फिर दौड़कर मेरे पास आता।
उसको मैं फिर पाठ पढ़ाती।
फिर मैं उसके साथ मस्ती करती।

जब भी मम्मी उससे रूठ जाती।
दिन भर वह तो रोता जाता ।
फिर वह मम्मी से माफी मांगता ।
मम्मी उसको माफ कर देती ।
फिर वह मम्मी को बात बताता।

- जैनब, 5अ

लोहड़ी

वर्ष की सभी ऋतुओं पतझड, सावन और बसंत में कई तरह के छोटे-बड़े त्योहार मनाए जाते हैं, जिन में से एक प्रमुख त्योहार लोहड़ी है ।जो बसंत के आगमन के साथ 13 जनवरी, पौष महीने की आखरी रात को मनाया जाता है। इसके अगले दिन माघ महीने की सक्रांति को माघी के रूप में मनाया जाता है।

लोहड़ी की संध्या को लोग लकड़ी जलाकर अग्नि के चारों ओर चक्कर काटते हुए नाचते-गाते हैं और आग में रेवड़ी, मूंगफली, खील, मक्की के दानों की आहुति देते हैं। अग्नि की परिक्रमा करते और आग के चारों ओर बैठकर लोग आग सेंकते हैं। इस दौरान रेवड़ी, खील, गजक, मक्का खाने का आनंद लेते हैं। लोहड़ी के दिन विशेष पकवान बनते हैं जिसमें गजक, रेवड़ी, मूंगफली, तिल-गुड़ के लड्डू, मक्का की रोटी और सरसों का साग प्रमुख होते हैं। लोहड़ी से कुछ दिन पहले से ही छोटे बच्चे लोहड़ी के गीत गाकर लोहड़ी हेतु लकड़ियां, मेवे, रेवडियां, मूंगफली इकट्ठा करने लग जाते हैं। पंजाबियों के लिए लोहड़ी उत्सव खास महत्व रखता है। जिस घर में नई शादी हुई हो या बच्चा हुआ हो उन्हें विशेष तौर पर बधाई दी जाती है। प्राय: घर में नव वधू या बच्चे की पहली लोहड़ी बहुत विशेष होती है। इस दिन बड़े प्रेम से बहन और बेटियों को घर बुलाया जाता है।

- भव प्रताप, 8अ, विक्रमशिला सदन

मकर संक्रांति का त्यौहार

मकर संक्रांति फसल काटने का त्यौहार है। मगर इसके खगोलीय और आध्यात्मिक महत्व भी हैं। यह कुछ योग अभ्यासों से उपजा है, जिन्हें आम लोगों ने ऐसे रूपों में अपनाया जो उनके लिए लाभदायक हो। यह समय योगियों के लिए सबसे अहम है, जब वे अपनी आध्यात्मिक प्रक्रिया में एक नई, ताजगी भरी कोशिश कर सकते हैं। इसी के अनुसार, पारिवारिक लोग भी अपने जीवन में जो कुछ भी कर रहे हों, उसमें एक नई कोशिश कर सकते हैं।. योग प्रणाली के कई पहलू खगोलीय प्रणाली और मानव शरीर के बीच के संबंध के आधार पर विकसित किए गए ताकि पल-पल, हर मिनट, हर घंटे, हर दिन लगातार खगोलीय स्थितियों में आने वाले बदलाव का लाभ उठाया जा सके।

उदाहरण के लिए, संख्या 108 मानव शरीर और संपूर्ण सौर मंडल की रचना में कई रूपों में अहम है। पारंपरिक रूप से अगर आप कोई माला पहनते हैं, तो उसमें 108 मनके होते हैं। अगर आप किसी मंत्र का उच्चारण करते हैं या किसी ऊर्जा स्थल की प्रदक्षिणा करते हैं, तो वह 108 बार करना होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर किसी को मानव तंत्र पर पूरी महारत, पूरी दक्षता हासिल करनी है, तो उसे 108 चीजें करनी पड़ती हैं।

मानव शरीर में 114 चक्र या बिंदु हैं, जहां नाड़ियां या ऊर्जा के प्रवाह मिलते हैं। इन 114 में से 2 शारीरिक ढांचे से बाहर हैं। शरीर के अंदर स्थित 112 चक्रों में से, असली मेहनत 108 पर करनी पड़ती है। अगर आप इन 108 को सक्रिय करने में कामयाब हो गए, तो बाकी के चार अपने आप सक्रिय हो जाएंगे। यह ग्रह प्रणाली में भी बहुत खूबसूरती से व्यक्त हुआ है। सूर्य का व्यास या डायामीटर पृथ्वी के व्यास या डायामीटर से 108 गुना है। सूर्य और पृथ्वी की दूरी सूर्य के व्यास से 108 गुना है। चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी चंद्रमा के व्यास से 108 गुना है। जिस पथ या कक्षा पर पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, उसमें पृथ्वी के 108 पद या अवस्थाएं आती हैं। पृथ्वी किसी माला के मनकों की तरह सूर्य के चारो ओर 108 स्थितियों में खुद को व्यवस्थित करती है। मकर संक्रांति पर सूर्य के चारों ओर 27 नक्षत्र या 108 पद पूरे होते हैं और एक नया चक्र शुरू होता है।

इस दिन गंगा स्नान का बहुत महत्व है। इस दिन खिचड़ी बनती है और दान पुण्य का बहुत महत्व होता है।

इस दिन पतंगे उड़ाई जाती हैं । पतंग को खुशी आजादी और शुभता का संकेत माना जाता है ।इस दिन भगवान सूर्य की पूजा करनी चाहिए ।मकर संक्रांति के त्यौहार के दिन गुड़ पट्टी मूंगफली गजक और रेवड़ी भी खाई जाती है ।इस दिन खिचड़ी और दही चूड़ा भी खाया जाता है। मकर संक्रांति को स्नान और दान का पर्व भी कहा जाता है। यह हर साल 14 वा 15 जनवरी को मनाया जाता है।

- अदिति भार्गव, 9 अ

सबसे महंगा फल

एक गांव में सुनील नाम का एक व्यक्ति अपनी पत्नी सुनीता के साथ रहता था। सुनील एक किसान था । जिस जमीन पर वह खेती करता था वह बहुत छोटी थी इसलिए वह ज्यादा पैसे नहीं काम पता था। पैसे कम होने के कारण वह अब पैसे बचाने के लिए कंजूसी करने लगा। वह कभी बेफिजूल के पैसे खर्च नहीं करता था।

सुनीता अपने पति की इस बात से बहुत परेशान थी । एक बार उसकी मन में केला खाने की इच्छा जागी परंतु उस समय घर में केला नहीं था । वह अपने पति से जा बोली अजी सुनते हो मुझे केले खाने का बहुत मन हो रहा है जाओ बाजार से केले ले आओ।

सुनील अपनी बीवी की आवाज सुनकर घर से बाहर केले लेने बाजार चला जाता है। बाजार पहुंचते ही उसे फलों की बहुत सी दुकान दिखाई देती हैं परंतु सबसे पहले पहली दुकान पर गया । वहां पहुंच कर उसने फलों का दाम पूछा। दुकानदार बोला ₹10 का 1 किलो। सुनील दुकानदार की यह बात सुनकर मन में बोला कि यह तो बहुत महंगा है ।

क्या पता मुझे इससे सस्ते में मिल जाए। यह सोचकर वह अगली दुकान पर चला गया वहां जाकर उसने केलों का दाम पूछा तो दुकानदार बोला की ₹5 का 1 किलो।

यह दाम जानकर अपने मन में बोला अगर मुझे 10 से सीधा ₹5 में 1 किलो मिल रहा है तो हो सकता है इससे कम में भी मिल जाए। वह दुकानदार से पूछा अरे भैया थोड़ा कम करोगे दाम। दुकानदार सुनील की आवाज सुनकर बोला नहीं नहीं साहब इससे कम तो नहीं हो सकता ।अगर और कम करना तो आगे जाइए एक दुकान है वह आपको दो-तीन रुपए में दे देगा।

दुकानदार की है बात सुनकर सुनील अगली दुकान पर पहुंच गया वहां जाकर उसने पूछा तो उसे ₹3 में भी 1 किलो मिल गया पर दोबारा अपनी कंजूसी करने के कारण वह सोचने लगा कि अगर मुझे ₹3 में मिल जा रहा है तो क्या पता मुझे ₹1 में मिल जाए। तो वह दुकानदार से पूछा अरे भैया दाम थोड़ा और कम कर दो। दुकानदार बोला नहीं नहीं साहब और कम नहीं होगा अगर आपको चाहिए तो आप आगे जाकर केले का पेड़ है वहां से आपको मुफ्त मिल जाएगा। दुकानदार की आवाज सुनकर सुनील बहुत खुश हुआ। वह आगे पहुंचा तो उसने देखा कि एक लंबे से पेड़ पर केले लगे हुए हैं । वह केले के पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करके ऊपर तक पहुंच गया और केले तोड़ने लगा परंतु अचानक तेज हवा चलने लगी और सुनील का संतुलन बिगड़ गया वह केले के पेड़ से गिरने वाला था।

वह मदद के लिए पुकारने लगा बचाओ कोई बचाओ। पेड़ के बगल से ही एक व्यक्ति अपने हाथी के साथ जा रहा था। सुनील की आवाज सुनकर वह सुनील से बोला सुनो मैं तुम्हें बचा लूंगा पर तुम्हें मुझे ₹100 देने पड़ेंगे।

उस समय सुनील को सिर्फ अपने जीवन को बचाना था इसलिए उसने हां कर दिया । वह व्यक्ति हाथी पर चढ़कर सुनील तक पहुंच गया परंतु वह अपना संतुलन न संभाल पाया और वह भी सुनील के साथ लटक गया। दोनों मदद के लिए पुकारने लगे बचाओ बचाओ कोई बचाओ। दोनों के लटक जाने पर एक और व्यक्ति अपने घोड़े के साथ जा रहा था । वह उन दोनों को बचाने के लिए बोलता है परंतु वह कहता है कि मैं तुम दोनों को बचाने के लिए हजार रुपए लूंगा। सुनील उसे भी हां कर देता है। वह जब अपने घोड़े पर चढ़कर उन्हें बचाने जाता है। तो वह भी अपना संतुलन नहीं बना पाता और उनके साथ लटक जाता। अचानक से तेज हवा का झोंका आया और वह तीनों हवा के साथ नीचे गिर गए तीनों दर्द से चिल्लाने लगे बचाओ बचाओ अरे कोई मदद करो। तीनों खुद को किसी तरह संभालते और अस्पताल पहुंचने की कोशिश करते। वहां पहुंचते ही वे अपना इलाज कराते ठीक होने के बाद घोड़े वाला और हाथी वाला दोनों सुनील से अपने पैसे मांगते । सुनील को उन्हें पैसे देने पड़ते। इस बार सुनील को एक सबक मिल गया था कि उसे तो ₹3 में भी फल मिल रहे थे परंतु उसने कंजूसी कर अपनी जान जोखिम में डालकर वह केले के पेड़ पर चढा इसके बाद सुनील खुद को वचन देता है कि अब से वह कभी कंजूसी नहीं करेगा उसे जितने भी पैसे में जो सामान मिल रहा है वह ले लेगा।

- पलक्षा, 7 ए, विक्रमशिला सदन

कहानी (समीक्षा) - सवा सेर गेहूं

- मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद की लेखनी सदा से ही मेरी आदर्श रही है। उनकी प्रत्येक किताब अपने आप में एक बेसकीमती रत्न है, जो हिंदी साहित्य की पुस्तकों के बीच अपनी एक अलग ही पहचान रखती है।
हर किताब आम जनमानस से जुड़ी हुई प्रतीत होती है ।जो सीधे व्यक्ति के मन मस्तिष्क तक पहुंचती है और इसी क्रम में उनकी किताब है सवा सेर गेहूं वा अन्य कहानियों में सवा सेर गेहूं कहानी ने मुझे बहुत प्रभावित किया और अंदर तक झकझोर दिया ।
वैसे मुंशी प्रेमचंद की किसी भी किताब के बारे में लिखना सरल नहीं, किंतु मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं आज उनकी कहानी की समीक्षा लिखने की छोटी सी कोशिश कर रही हूं।
यह कहानी एक सत्य घटना पर आधारित है। इसमें उन्होंने ऐसे महात्मा के बारे में बताया जो खानदानी रईसों के महलों में पूजा पाठ करतें थे, उनकी हवादार गाड़ियों में देवस्थानों का भ्रमण करते थे और छप्पन भोगों का स्वाद ग्रहण करते थे। अब यदि वह किसी गरीब की कुटिया पर पहुंच जाए तो उस गरीब का क्या हश्र होता होगा। यह कहानी सामंतवादी व्यवस्था, धार्मिक अंधविश्वास एवं शोषण जैसी विषमताओं से भरी है। कहानी का मुख्य पात्र शंकर सवा सर गेहूं का दाम पूरे जीवन भर चुकाता है फिर भी इसका ब्याज समाप्त नहीं होता।
कहानी की भाषा सरल और बहुत ही मार्मिक है। देशज शब्दों का भरपूर प्रयोग किया गया है ।हमारी आंखों के सामने जैसे कोई फिल्म चल रही हो, पढ़ने पर ऐसे लगता है। कहानी में सर्वसाधारण जनमानस की समझ में आने वाले मुहावरों ,लोकोक्तियां का प्रयोग किया गया है। हिंदी भाषा की खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। कहानी साधारण लोगों को यह संदेश देती है कि अपनी आय से अधिक खर्च नहीं करना चाहिए ।धूर्त और चालाक लोगों से सतर्क रहना चाहिए। धार्मिक अंधविश्वास और परलोक में सुख की चाहत हमें इसी लोक में अनेक परेशानियों एवं कष्टों से भर देती है। इस प्रकार प्रेमचंद ने 18वीं 19वीं सदी के ग्रामीण भारत की जीवन व्यवस्था को चित्रित किया है। कहानी की भाषा सरल एवं सुबोध है कहानी पढ़ने के बाद हमारा हृदय भाव विभोर हो जाता है ।
प्रेमचंद की कहानियों का संग्रह मानव भारती विद्यालय में मौजूद है। सभी लोगों से अपेक्षा की जाती है कि इस पुस्तक को अवश्य पढ़े प्रेमचंद एक महान साहित्यकार, महान कहानीकार एवं विशुद्ध जीवन दृष्टा थे। उन्होंने तत्कालीन समाज को बहुत नजदीक से देखा और सामाजिक व्यवस्था सामाजिक बदलाव, राजशाही, परतंत्रता जैसे विषयों को कहानी के रूप में लेखनीबद्ध किया। यह कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी पहले थी प्रेमचंद की कहानियां शिक्षाप्रद है। आप सभी अवश्य पढ़े।

- डॉ. बबिता गुप्ता
हिन्दी अध्यापिका

नारी के रूप अनेक

जैसा कि आप सब जानते हैं आजकल बहुत सारी महिलाएं घर से बाहर निकल कर अपने आप को आर्थिक रूप से मज़बूत बना रही है। इस कारण जो भी अत्याचार उन्हें सहना पड़ता था वह कम हो गए हैं। पर अभी भी हमारे समाज में उनसे यह उम्मीद की जाती है कि अगर एक बहू बाहर काम पर जा रही है तो उससे घर का काम करने की उम्मीद भी की जाती हैं।
वह अभी भी सोचते हैं कि घर चलाने का काम सिर्फ औरतों का है और जब एक मर्द काम करने जाता है तो उससे घर संवारने की उम्मीद नहीं की जाती हैं। इस कारण एक नारी को कई सारे रूप धारण करने पड़ते है। जैसे एक अच्छी मां, पत्नी,बहू और बेटी। एक महिला का दिन सुबह 4:00 बजे से शुरू होता है रात के 10:00 बजे खत्म होता है। समाज में उनसे यह उम्मीद की जाती हैं कि वह यह सब कुछ अकेले संभाल कर अपने कार्य में आगे बढ़े।
महिलाओं ने यह भी साबित कर दिया है। इसका एक उदाहरण मेरी कॉम है। उसने दो बच्चों की मां होकर भी अपने देश का झंडा ऊंचा कर दिया है। इससे हमारे देश भारत का नाम महिला बॉक्सिंग में आगे बढ़ रहा है। इससे हमें पता चलता है कि हमारा समाज कितना भी महिलाओं को दबाने की कोशिश करें, किन्तु वह उसी दबाव के कारण और ताकतवर बन जाती हैं। जिस प्रकार एक पत्थर पर जब दबाव पड़ता है तो वह एक बलवान और सुंदर हीरा बन जाता है।

- आर्ना, 9 ब

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस हर साल 26 जनवरी को मनाया जाता है ।गणतंत्र राष्ट्र वह राष्ट्र होता है जहां किसी देश का अपना संविधान लागू होता है। इस शब्द के अनुसार भारत में अपना संविधान लागू होने यानि भारत के गणतंत्र होने के अवसर पर गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।

संविधान के निर्माता ने 26 नवंबर सन 1949 में ही संविधान का निर्माण कर दिया था, मगर इसे 26 जनवरी सन 1950 में लागू किया गया ऐसा क्यों हुआ आईये जानते हैं ? ऐसा करने की एक खास वजह है। वास्तव में 26 जनवरी 1930 को कांग्रेस ने देश की पूर्ण आजादी या पूर्ण स्वराज का नारा दिया था। इसी की याद में संविधान को लागू करने के लिए 26 जनवरी 1950 तक इंतजार किया गया ।

क्या है संविधान ? क्या यह किसी किताब का नाम है संविधान या कोई देश है संविधान। क्या कोई खाने की चीज है संविधान या कोई पहनने की चीज है संविधान ? क्या यह बुरा है ? या यह भला है। असलियत में यह वह माध्यम है, जिससे हमें अनेकता में एकता का नारा मिला है। यह वह भरोसा है जो हर नागरिक एक दूसरे पर करता है यह वह यकीन है जो हर अल्पसंख्यक समूह समानता पर करता है।

- अंशुल ध्यानी, 9 ब, नालंदा सदन

सुभाष चंद्र बोस

सुनो कथा उस वीर पुरुष की जो भारत का एक सितारा था।
वही वीर जिसने अंग्रेजो को
वीरता का पाठ पढ़ाया था।
वही चक्रवर्ती ,त्यागी और संन्यासी,
जिसके गौरव को याद है रखते युगों तक भारतवासी।
विद्रोह किया जमकर उनका,
हर भारती के होठों पर
जय हिंद का उसने नारा दिया ।
ले गए थे उसे भी बाकियों के जैसे फांसी के फंदे पर लहराने,
किंतु गोरो को भनक न थी
वह आया है तिरंगा फहराने।
कुर्बान तो होते हैं देशभक्त
तूफान कहां कुर्बानी देते हैं,
कुर्बान तो होती है ख्वाहिशे
इरादे कहां कुर्बानी देते हैं ।
लोगों के लिए वह नेता था।
हर हिंदू के दिल का विजेता था।
मांगा था खून आजादी के बदले,
नारों से जोश जगाया था ।
सिर्फ सुभाष चंद्र के नाम ने ही गोरो पर कहर ढाया था।
कहते हैं लोग कि एक जहाज दुर्घटना में
यह वीर न बचने पाया था,
लेकिन सच तो यह है कि
उसके इरादों का बोझ जहाज खुद न सह पाया था ।
उसी भारत के वीर पुरुष की
यह एक अमर कहानी थी
इरादे थे आजादी के
जय हिंद ही उसकी निशानी थी ।

- कृष्णा मंदीप नेगी, 9 ब, विक्रमशिला सदन

मातृभाषा का महत्व

संस्कृति की वाहक, जीवन की धारक
मातृभाषा सबकी, प्राणों की परिपूरक।

मातृभाषा संस्कृति की वाहिका होती है और यही हमें संस्कार और व्यवहार सिखाती है ।मातृभाषा हमें सामाजिक स्तर पर परंपरा, इतिहास और सांस्कृतिक तौर पर जोड़ती है। भारत में सैकड़ो प्रकार की मातृभाषाएं बोली जाती है जो देश की विविधता और अनूठी संस्कृति को बयां करती है।
मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। इससे हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़कर उसकी धरोहर को आगे बढ़ाते हैं।
भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है -

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।

अर्थात मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है ।अगर हमको पालने वाली मां होती है तो हमारी भाषा भी हमारी मां है हमको पालने का कार्य हमारी मातृभाषा भी करती है ।इसलिए मां और मातृभाषा को बराबर दर्जा दिया गया है ।

- अंशुल ध्यानी, 9 ब, नालंदा सदन

बाल मजदूरी

बच्चे जो हमारे देश का भविष्य है यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें पढ़ाई लिखाई खेल जैसी चीजों में आगे बढ़ाने के लिए सहयोग करें ।
लेकिन यह सब हर बच्चे के भाग्य में नहीं है कई बच्चे बाल मजदूरी तथा शोषण का शिकार बन जाते हैं ।बच्चों का काम केवल स्कूल जाना है ना कि मजदूरी करना बाल मजदूरी बच्चों से स्कूल जाने का अधिकार छीन लेती है। और वह कभी गरीबी के चक्रव्यूह से कभी बाहर नहीं निकल पाते।
हमारे देश में किसी बच्चे को कठिन कार्य करते जैसे ईट भट्टों पर काम करना दूसरे के घर जाकर घरेलू कामकाज करना चाय की दुकान पर काम करना, खेती बाड़ी आदि काम करते हुए देखना आम बात हो गई है।
बाल मजदूरी के कई कारण है मुख्य कारण हमारे देश की गरीबी का होना है कुछ बच्चों के माता-पिता लालची होते हैं पैसे होने के बावजूद भी वह अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहते हैं और उन्हें काम पर भेज कर अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहते हैं ।
हम सभी लोगों का कर्तव्य है कि अगर हमें आसपास छोटे बच्चे काम पर जाते हुए देखे तो उन्हें स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करें उनके मां-बाप को समझाएं क्योंकि आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं उनका बचपन ना छीना जाए और उन्हें पढ़ने लिखने और खेलने कूदने की सुविधा दी जाए। सरकार से भी अनुरोध है कि बाल मजदूरी पर सख्त से सख्त कार्यवाही करें ।

- अंबिका, 9 ब, तक्षशिला सदन

छोटे-छोटे हाथों में बड़े-बड़े बोझ,
कूड़े के ढेर में
रहे जिंदगी खोज।

सुबह-सुबह निकल पड़ते हैं,
लिए हाथों में बस्ता।
किताबें नहीं है उसमें फिर भी,
ढूंढे जीने का रस्ता ।

ठेले पे हाथ बंटा बाप का,
भूल गए बचपन अपना।
तुम ही कहो क्या हो सकता है,
उन आंखों का सपना ।

उन नन्हीं आंखों के सपने,
हो रहे हैं जमींदोज।
उस ठेले के चाको में,
रहे जिंदगी खोज ।

- अंशुल ध्यानी, 9 ब, नालंदा सदन

साइकिल चलाने के फायदे

- साइकिल चलाने से हमारे हृदय का स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है ।
- साइकिल चलाना वजन घटाने में सहायक होता है।
- साइकिल हमारी मांसपेशियों को मजबूत बनाता है ।
- अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें 20 से 30 मिनट तक साइकिल चलानी चाहिए।
- मानसिक तनाव कम करता है।
- साइकिल चलाना मधुमेह के जोखिम को कम करता है ।
- साइकिल चलाना गठिया की रोकथाम में मदद करता है।
- अगर अधिकतर लोग साइकिल चलाएंगे तो गाड़ियों का कम इस्तेमाल होगा जिससे प्रदूषण कम होगा।
- साइकिल चलाने से स्ट्रेस कम होता है।
- साइकिल चलाने से हृदय व रक्त वाहिकाओं से संबंधी जोखिम कम किया जा सकता है ।

- तानिया पासवान, 8 ब, पंचशीला सदन

आत्मानं विद्धि

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265
संपादक - डॉ. बबिता गुप्ता, डिजाइन - विशाल लोधा